Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, JUNE-JULY 2018, VOL- 6/28

आधुनिकता बोध और नई हिन्दी कहानी

रामयज्ञ मौर्य, Ph. D.
एसो0 प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मेरठ कॉलंज,मेरठ।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

आधुनिकता का बोध जिस सहजता से हो जाता है उसको परिभाषित कर पाना उतना सहज नही होता है। इसकी परिभाषा अत्यन्त जटिल है। यद्यपि समय–समय पर विद्वानों, मनीषियों, आलोचकों ने आधुनिकता के समस्त अवयवों, उपादानों को परिभाषा रूपी डिबिया म बन्द करने का भरसक प्रयास किया है पर सभी मान्यताओं, परिभाषाओं, अवधारणाओं के सूक्ष्म अवलोकन, विश्लेषण के बाद हम देखते है कि उसका कोई न कोई अवयव या अंग बाहर ही रह गया है। या फिर कोई न कोई अनावश्यक तत्व साथ जुड़ गया है। परिणामतः आज तक इतने बहस विचार –विमर्श के बाद भी आधुनिकता की एक निश्चित और सर्वमान्य परिभाषा नही दी जा सकी है और न इसकी कोई सुनिश्चित रूपरेखा ही तय हो पायी है। विडम्बना यह कि हम उत्तर आधुनिकता के दौर में दौड़ने लगे ह और आधुनिकता को छोड़ उत्तर आधुनिकता को शब्द सीमा में बाँधने का प्रयास करने लगे है। वाद–विवाद–संवाद का केन्द अब उत्तर आधुनिकता हो गयी है। फिलहाल यहाँ विषय उत्तर– आधुनिकता का नही आधुनिकता का है। वैसे भी उत्तर –आधुनिकता की अवधारणा का जन्म आधुनिकता की प्रतिक्रिया में हुआ है अतः यहाँ आधुनिकता पर ही केन्द्रित होना अधिक न्याय संगत होगा।

वैसे तो आधुनिक युग का प्रारम्भ पन्द्रहवी शताब्दी से माना जा सकता है जब Nation States की अवधारणा का जन्म हुआ। लेकिन फ्रांस क्रान्ति और रूस–क्रान्ति के बाद आधुनिकता का सन्दर्भ बदल जाता है और इसका सन्दर्भ विश्व व्यापी ग्रन्थों से जुड जाता है। औद्योगोकरण, सामाजिक चेतना के विकास, नवजागरण या पनर्जागरण, मनुष्य की अस्मिता की तलाश व पहचान के बाद तो आधुनिकता एक सार्वभौमिक, सार्वजनीन नितान्त महत्वपूर्ण जीवन द ष्टि जीवन–ग्रन्थ बन गया । आधुनिक साहित्य में अंग्रेजी " Modern" शब्द पर्याप्त प्रचलित हुआ ओर बीसवी शती को तो Modern, Modernism और Modernist हिन्द रूपान्तर आधुनिक, आधुनिकता और आधुनिकतावादी इत्यादि शब्दो में बाँध सा लिया गया है। आधुनिक, आधुनिकता और आधुनिकता बोध को हम कुछेक विद्वानों के निम्नांकित विचारों के आलोक में अच्छी तरह समझ सकते हैः–

1. जाने माने इतिहासविद् प्रो0 इरफान हबीब पन्द्रवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध अर्थात Nation States के आगमन से आधुनिकता का उदय मानते ह। इनका यह भी मानना है कि फ्रान्स की क्रान्ति (सन्

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1789ई0) के बाद से आधुनिकता का सन्दर्भ बदल जाता है और यह विश्वव्यापी मूल्यों से जुड जाता है तथा देश और धर्म से ऊपर मानवता को माना गया।

2. डॉ0 दीनानाथ सिंह के अनुसार आधुनिकता बोध उन्नत संस्कार युक्त जीवन शैली है।

3 डॉ0 रामकिशोर का कहना है आधुनिकता मात्र समकालीनता नही है बल्कि जीवन और जगत का अमिथकीय साक्षात्कार आधुनिकता है।

4. प्रा0 उदयशंकर श्रीवास्तव अतीत और वर्तमान को जोड़ते हुए आधुनिकता को व्याख्यायित करते ह और कहते ह– "अतीत से अतीतत्व को अलग करके वतमानत्व को ग्रहण करें यही आधुनिकता है।"

5. प्रो0 नजीर मुहम्मद का विचार है– "आधुनिकता बोध हमें विश्व मानव से जोड़ता है। यह मानववाद तक ले जाता है। साहस के साथ मानव को खड़ा होने का अधिकार देता है" अर्थात "मानव विश्वपरिवार का एक अंग है" का बोध ही आधुनिकता बोध है।

6. डॉ0 सुरेन्द्र दुबे बताते है, "आधुनिकता बोध एक ओर मूल्य बोध और दूसरी तरफ काल बोध से जुड़ा हुआ है।"

7. नयी कहानी के तीन प्रमुख स्तम्भों में से एक प्रसिद्ध कहानीकार कमलेश्वर निरन्तर परिवर्तन की प्रक्रिया को आधुनिकता कहते है।

8. विलवर्टमूर के अनुसार : The Concept of modernization denotes a total transformation of a tradition or pre -modern society.[1]

उक्त विचारों, मान्यताओं परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते है कि आधुनिकता का पटल बहुत ही व्यापक है। आधुनिक को किसी काल या सीमा से नही बाँधा जा सकता है न इसके लिए कोई विभाजक रेखा ही खींची जा सकती है। हाँ, आधुनिक शब्द का प्रयोग सावधानीपूर्वक न करने के कारण कभी–कभी अनेक भ्रांतियों का शिकार होना पड़ता है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि लोग आधुनिक शब्द का प्रयोग विशेषण के रूप में मनमाने ढंग से करते रहते है। आधुनिक आधुनिकता, आधुनिकतावादी, आधुनिकीकरण कुछ ऐसे शब्द हैं जो पर्याय रूप में प्रयुक्त होते रहते है। आधुनिक साहित्य के 'Modern' की हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ति आधुनिक, अर्वाचीन, वर्तमान, आधुनिक समय का तथा आजकल के रूप में होती है। नया, नये युग का, नये जमाने का, नये ढंग का, नूतन, आधुनिक परिपाटियों पर चलने वाला नये फैशन का, नव युगीन तथा आधुनिक काल के व्यक्ति
के लिए भी "आधुनिकता" की संज्ञा प्रदान की गयी।"[2] इस विचार धारा को मानने या आगे बढ़ाने वाले लोगों को आधुनिकता वादी कहा जाने लगा। अतीत और परम्परा को एक ही सन्दर्भ में देखने वाले कुछ

[1] Social Change -Wilbert Moore , W.E. (1963)

[2] "आधुनिक साहित्यिक निबन्ध" सं0 डॉ0 त्रिभुवन सिंह में संकलित निबन्ध आधुनिक साहित्य : एक दृष्टि लेखक डॉ0 त्रिभुवन सिंह (पृष्ठ1)

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आधुनिक और आधुनिकता को परम्परा का विलोम मान लेते ह। मेरा विचार है–शब्दों की प्रकृति को भली– भाँति समझकर, यथा स्थान उनका प्रयोग करके अनेक भ्रान्तिया से बचा जा सकता है। परम्परा और आधुनिकता में अन्तर्विरोध माना जा सकता है लेकिन वे एक दूसरे के विलोम नही ह"। हमें यह नही भूलना चाहिए कि आधुनिकता का जन्म परम्परा के कारण होता है और आगे चलकर आधुनिकता ही परम्परा का रूप धारण कर लेती है। यथा–"बुद्धिमान आदमी एक पैर से खड़ा रहता है, दूसरे से चलता है।यह केवल व्यक्ति सत्य नही है, सामाजिक सन्दर्भ में भी यही सत्य है। खड़ा पैर परम्परा है और चलता पैर आधुनिकता, दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध खोजना बहुत कठिन नही है। एक के बिना दूसरे की कल्पना ही नही की जा सकतो है।"[3] माननीय हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के "चलता पैर आधुनिकता" से स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिकता नित और नये मूल्यों का सृजन है। जो "कल" आधुनिक था "आज" के लिए पुराना है और जो "आज" आधुनिक है निश्चित ही 'कल' के लिए पुराना हो जायेगा।

आधुनिकता का जन्म चाहे जैसे, चाहे जिन परिस्थतियों अथवा चाहे जिन कारणों से हुआ हो लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण, यथार्थपरक सोच, मानवतावादी चिन्तन, विश्व व्यापी जीवन मूल्य और जीवन दृष्टि इसकी अनिवार्यता है। हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में आधुनिकता युगानकूल विज्ञान
प्रसूत बौद्धिक नव चेतना के रूप में प्रकट हुई है और नये मानव मूल्यों के प्रति आस्थावान हो उत्तरोत्तर बौद्धिक होती जा रही है, जो आज का युग धर्म है और इस युग धर्म का बोध आधुनिकता बाधे है कुछ विद्वान सामयिक बोध को ही आधुनिकता बोध कह देते है। परन्तु दोनों में पर्याप्त अन्तर है और इस अन्तर को समझ लेना आवश्यक है। सामयिक बोध में युग को समग्रतः पकड पाना सम्भव नही होता जबकि युग बोध अथवा आधुनिकता बोध में युग का समग्रतः पकड पाना सम्भव होता है। सामयिकता जहाँ काल को इंगित करती है वहीं आधुनिकता बोध काल चेतना के प्रवाह का दर्शाता है। प्रस्तुत आलेख में हम इसी आधुनिकता बोध के आलोक म हिन्दी की "नयी कहानी" के विवेचन का प्रयास करेंगे।

नयी कहानी में 'नया' एक सापेक्ष शब्द है जो पुराने की अपेक्षा रखता है। नयी कहानी का पहला और सीधा अर्थ यही होता है कि जो कहानी पुरानी नही है, वह नयी कहानी है। प्रश्न उठता है नया और पुराना से क्या तात्पर्य है? नया शब्द कालगत भी हो सकता है, रूपगत भी और गणगत । अतीत काल की तुलना में वर्तमान काल नया है , प्राचीन काल की तुलना में मध्यकाल और मध्यकाल की तुलना में आधुनिक काल। यदि हम वैज्ञानिक दृष्टि से कहानी के बारे में विचार करें तो इस निष्कर्ष पर पहचगे कि आदिकाल से लेकर आज तक की कहानी में इसी प्रकार के रूपगत और गुणगत परिवर्तन होते आये ह। हर बार कहानी नयी से पुरानी और पुरानी से नयी बनती रही है।

---

[3] डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के परम्परा और आधुनिकता नामक निबन्ध से उद्धत।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

यदि व्यापक अर्थो में देखा जाय तो कहानी का जीवन उतना ही पुराना है जितना मनुष्य का सामाजिक जीवन परन्तु हिन्दी कहानी के साहित्य का वास्तविक आरम्भ सन् 1900ई0 में 'सरस्वती' पत्रिका और सन् 1909ई0 से 'इन्दु नामक पत्रिका के प्रकाशन के साथ हुआ माना जाता है। प्रथम विश्वयुद्ध, द्वितीय विश्वयुद्ध इत्यादि विश्व की ऐतिहासिक घटनाओं, औद्योगोकरण, माक्सवादी विचार धारा, पूँजीवाद स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए हुए विभिन्न आन्दोलनों, समाज सुधार आन्दोलनों, संचार माध्यमों, संसाधनों इत्यादि की सुलभता इत्यादि का साहित्य और विशेषकर कथा साहित्य पर व्यापक प्रभाव पडा । परिणाम स्वरूप राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक सरोकारों के चलते हिन्दी कहानी भी समय समय पर अपना रूप –स्वरूप बदलती रही है लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय तक इस विधा या साहित्य के इस रूप को कहानी ही कहा जाता रहा। 'कहानी' नाम के साथ कोई अन्य शब्द या विशेषण जोड़ने की आवश्यकता महसूस नही की गयी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सन् 1950ई0 के आसपास लोग तत्कालीन कहानी को "नयी कहानी" कहने लगे ।

वस्तुतः स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जीवन के अन्य क्षेत्रों की भाँति साहित्य में भी कुछ नया कर गुजरने की प्रवृत्ति बलवती रूप से उत्पन्न हुई। नया कर गुजरने की इस प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप ही नव लेखन का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। साहित्य के लगभग सभी विधाओं में नये कथ्य और नये शिल्प का प्रयोग प्रारम्भ किया गया। नयी कविता, नवगीत, नवनाटक नई समीक्षा तथा नई कहानी इत्यादि का प्रारम्भ सन् 1950ई0 के आसपास ही हुआ अर्थात सबके साथ 'नया' विशेषण जुडने लगा।

"नयी कहानी " इस अभिधान के प्रथम प्रयोग का श्रेय स्व0 दुष्यन्त कुमार को है, जिन्होनें 'कल्पना' में प्रकाशित अपने लेख मं इसका सूत्रपात किया।[4] फिर डॉ0नामवर सिंह ने कहानी के पूर्व नयी कविता की भाँति 'नयी' शब्द जोड़ने की आवश्यकता को रेखांकित किया।[5] उस समय के लेखकों विशेषकर नयी कहानी के त्रयी के रूप में प्रसिद्ध मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेन्द्र यादव ने नयेपन के औचित्य को अपने अपने तर्को से स्थापित भी किया। इस प्रकार नयी कहानी की परम्परा चल पडो जो लगभग 60–65 ई0 तक फलती फूलती रही।

फणीश्वर नाथ रेणु, शिव प्रसाद सिंह, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, अमरकान्त, शेखर जोशी, श्रीकान्त वर्मा, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, रमेश वक्षी, हरिशंकर परसाई, अमृत राय, मन्न् भण्डारी, कृष्णा सोबती, मार्कण्डेय, भोष्म साहनी, उषा प्रियंवदा, शानी, शैलेश मटियानी इत्यादि लेखकों तथा प्रतीक, कल्पना, नया पथ, निकष, कहानी, हंस, कृति, नयी कहानियाँ इत्यादि पत्रिकाओं का नयी कहानी की स्थापना में महत योगदान है। भैरवप्रसाद गुप्त ने अपनी पत्रिका और कहानियों के माध्यम से नयी कहानी को पल्वित पुष्पित किया। नई कहानी के इस दौर में विविध आयामों के साथ खूब कहानियाँ

---

[4] कमलेश्वर : नयी कहानी की भूमिका (शुरू की बात) पृष्ठ–6

[5] डॉ0 नामवर सिंह : कहानी : नई कहानी (पृ0 19) तथा कहानी नववर्षांक–59 नयी कहानी नये प्रश्न लेख में।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

लिखी गयीं। ठुमरी (फणोश्वर नाथ रेणु), कर्मनाशा की हार (शिव प्रसाद सिंह), राजा निरबंसिया (कमलेश्वर) पानफूल (मार्कण्डेय) कोसी का घटवार (शेखर जोशी) यही सच है (मन्न् भंडारी) जिन्दगी और जोंक (अमरकान्त) भाग्य रेखा (भीष्म साहनी) परिन्दे (निर्मल वर्मा) बबूल की छाँव (शानी) इत्यादि कहानी संग्रहों में संकलित अनेक सशक्त नयी कहानियाँ इस दौर की महत्वपूर्ण निधि है।

नयी कहानियों में "आधुनिकता बोध" की एक महत्वपूर्ण सम्पन्न दृष्टि है। नया कहानीकार जिन्दगी को एक नये दृष्टिकोण से देखता है।वह जीवन से प्रतिबद्ध होता है। "जीवन उसके लिए सीधी सादी और बनी बनायी राह नही है बल्कि एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है।"[6] नामवर सिंह के अनुसार "स्वाधीनता के बाद हमारा साहित्य सर्वथा एक नये सन्दर्भ में आ पड़ा। इस सन्दर्भ में बिना जुड़े लेखन तो सम्भव है, लेकिन साहित्य सृजन नही ।"[7] यह स्वातन्त्रयोत्तर नया सन्दर्भ वास्तव में आधुनिकता बोध था। आधुनिकता और परम्परा के सम्बन्धों की तरफ संकेत करते हुए डॉ0 इन्द्रनाथ मदान ने नयी कहानी की पहचान बताते हुए कहा है कि "अगर कहानी की पहचान में कहानी को आधार बनाया गया होता, आधुनिकता को उसकी निरन्तरता में आँका गया होता तो इतनी गहरी धूल शायद न उड़ती। इसे उड़ना था और बैठने के बाद ही दृष्टि तथा दृश्य साफ होना था।"[8] नयी कहानी की पहचान उसमें अभिव्यक्त यथार्थ जीवन की प्रामाणिकता के आधार पर निर्मित हुई । इस काल में लिखी गयी कहानियों में गाँवों और शहरों में रहने वाले मध्यमवर्गीय समाज के जीवन और परिवेश का पूर्ण चित्रण हुआ है। अधिकांश लेखक चूँकि इसी मध्यवर्ग से आये थे, गाँवों से, कस्बों से आये थे। इसलिए कह सकते है कि इनका यथार्थ भोगा हुआ यथार्थ है जो आधुनिकता बोध का एक प्रमुख लक्षण है। आधुनिकता बोध के लिए आवश्यक है – बौद्धिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण। हम देखते ह कि नयी कहानी के दौर में बौद्धिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण परम्परागत, धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूढियाँ भी टूटती जा रही थी। यथार्थ जीवन पुराने से काफी भिन्न हो रहा था। कमलेश्वर के अनुसार – " नयी कहानी में जीवन के संश्लिष्ट यथार्थ के सभी आयामों को खोजकर बिना किसी तनाव या अतिरिक्त रोमांटिक लगाव के अभिव्यक्त कर सकता है। उनका तात्पर्य यह है कि यथार्थ का चित्रण ऐसा होना चाहिए कि प्रमाणिक प्रतीत हो। यह प्रमाणिकता ही अनुभव की सच्चाइ है।"[9] यथार्थ को रूबरू देखने की दिशा में हर पूर्वाग्रह और परम्परा गत दृष्टिकोण को छोड़ने की अकुलाहट .....हर लीक को तोडने का आक्रोश"[10] को नये कहानी कार की प्रतिबद्धता बताया था। इस प्रकार हम कह सकते ह कि "यथार्थ

---

[6] डॉ0 कामेश्वर प्रसाद सिंह : नई कहानी और मध्यवर्म पृ0 21

[7] डॉ0 नामवर सिंह : कहानी : नई कहानी।

[8] डॉ इन्द्रनाथ सिंह मदानः हिन्दी कहानी : एक नई दृष्टि पृ041

[9] कमलेश्वर : नई कहानी की भूमिका पृष्ठ 47

[10] राजेन्द्र यादव : एक दुनिया समान्तर : भूमिका पृष्ठ–28

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के प्रति एक नया रूख ही नही कहानी की आधार भूमि है और नयी कहानी की समस्त प्रवृत्तियाँ इसी आधारभूत प्रवृत्ति से निष्पन्न हैं।"[11]

स्वतन्त्रता प्राप्ति के कुछ वर्षो बाद का दौर मोह भंग का दौर था। स्वतन्त्रता के समय देखे गये सुहाने सपने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद मात्र सपने बनकर रह गये, जो अपेक्षा थी वह पूरी न हो सकी जीवन खिन्न होने लगा। इस दौर में हमारे पारस्परिक सम्बन्ध, रिश्ते नाते सब बदल रहे थे। उन सबका सूक्ष्म और गम्भीर विश्लेषण नही कहानी में हुआ। सबसे बड़ा परिवर्तन स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में आया और इसे लेकर अनेक कहानियों का सृजन हुआ।

नई कहानी में मध्यमवर्गीय जीवन और व्यक्ति उसके केन्द्र में आ गया जो अब तक परिधि पर पड़े हुए थे या पूर्ववर्ती कहानियों में हाशिए पर छोड़ दिये गये थे। निम्नवर्गीय कृषक, मजदूर, शोषित, सर्वहारा यद्यपि प्रेमचन्द युगीन कहानियों में नायक बन कर उभरे थे लेकिन उन्हें वह प्रतिष्ठा नही मिली थी जो नयी कहानी में मिली। नयी कहानी में भारतीयता और भारतीय अस्मिता की अभिव्यक्ति का नवीन रूप सामने आया है। नयी कहानी में आधुनिक मानव की विसगति का चित्रण अधिक मिलता है। राजा निरबंसिया का 'जगपती' हो या खोई हुई दिशाएं का 'चन्दर' चाहे 'मृत्यु' की प्रतीक्षा करता पिता या मिथ्या अरोपों के कारण दम तोड़ती हुई 'अरून्धती' की लड़की बहू, सभी का अपना अपना संत्रास है। नये कहानीकार को घटनाऐं, स्थितियां, देश, विश्व समाज प्यारे नही हैं, वह सिर्फ एक ही सत्ता स्वीकार करता है और वह है आदमी और उसकी जिन्दगी।"[12] आधुनिक मानव की खोज आधुनिक नये कहानीकारों के सामने सदैव एक प्रश्न के रूप में ही रहा है।

नयी कहानी के दौर में कहानी के शिल्प के नये आयाम भी विकसित हुए। नयी कहानी में कथानक की जगह कथ्य का महत्व है। कमलेश्वर के अनुसार "अब कथ्य ही प्रमुख है क्योंकि कथ्य का संकेत ही आनुपातिक रूप में अर्थो की सृष्टि करता है। अब कहानी केवल कुछ विशिष्ट चरित्रों की कहानी नही है।"[13] नयी कहानी की चरित्र योजना सम्बन्धी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उसमें लेखको ने अधिकतर अपने को ही केन्द्रीय व्यक्ति या चरित्र बनाया है।चरित्र योजना केवल नये मूल्यों की खोज और पुरानी रूढ़ियों को तोडने के लिए है। नयी कहानी में देशकाल का तात्पर्य है– परिस्थितिगत सन्दर्भ और कालगत सौन्दर्य। शैली की दृष्टि से नयी कहानी में अधिकांशतः आत्मकथात्मक शैली अपनायी गयी है।इसमें सीधापन और सपाटता है।उतार चढाव और क्लाईमैक्स को दिखाने की पद्धति समाप्त हो गयी । नयी कहानी के संवादों की विशेषता है कि उनमें चरित्रों को बातचीत को यथावत ढंग से उद्धृत किया गया है। नयी कहानी का उद्देश्य उनके द्वारा नवीन मूल्यों की स्थापना और घिसे पिटे रूढ़िवादी मूल्यों का खण्डन करना है। ये मानवीय मूल्य आधुनिक जीवन दृष्टि के परिणाम है जो

---

[11] डॉ पुष्पपाल सिंह : समकालीन हिन्दी कहानी पृष्ठ 12 –13

[12] शिवप्रसाद सिंह : कर्मनाशा की हार पृष्ठ–6

[13] कमलेश्वर : नयी कहानी की भूमिका पृष्ठ 26

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

लोकतन्त्र समाजवाद, विज्ञान और मनोविज्ञान की देन है। हम कह सकत हैं कि कहानी के पारम्परिक शिल्प में भी काफी बदलाव आया।

इस प्रकार –नयी कहानी' के अध्ययन, सम्यक विवेचन और विश्लेषणोपरान्त हम देख सकते है कि आधुनिकता बोध नयी कहानी की सबसे बडो विशेषता है। यह आधुनिकता बोध पूर्व कहानियों या पूर्व साहित्य रूपों की भाँति नही बल्कि समग्रता में उभरकर सामने आता है। इस दौर की कहानियों में समकालीन ज्ञान –विज्ञान और बौद्धिक मानसिकता से युक्त व्यक्ति का बोध परिलक्षित हुआ है। इन कहानियों से स्पष्ट होता है कि आधुनिकता का सम्बन्ध ग्राम, अंचल, नगर अथवा कस्बों से न होकर जीवन–दृष्टि से है; जीवन मूल्य से है। वस्तुतः आधुनिकता के विभिन्न विशेष और नवीन सन्दर्भो के कारण हुए उसमें मूलभूत परिवर्तन को देखकर सामने रख देना ही उसकी सफलता है। नयी कहानी में "आधुनिकता की एक सविशेष जीवन –दृष्टि है जिसमें प्रत्येक वस्तु के यथार्थ की चेतना में सम्बद्ध करके देखते ह। जिसमें परिवेश के प्रति सम्पूर्ण संलग्नता मानव सम्बन्धों की ऐतिहासिक चेतना का पूर्ण साक्षात्कार, अनुभवों की परस्पर सह सम्बद्धता आदि आधुनिक बोध के विविध स्तर प्रत्यक्ष देखे जा सकते हैं। "[14] नयी कहानी के जीवन दृष्टि में वैज्ञानिकता, बौद्धिकता, प्रमाणिकता, तार्किकता, सत्यता और विश्वसनीयता है यही आधुनिक जीवन दृष्टि है जिसे आधुनिकता बोध की संज्ञा देते ह। नयी कहानी का आधुनिकता बोध वह वैज्ञानिक दृष्टि है जो वस्तुओं के वाहय रूपों को नही बल्कि उनके भीतर निहित सत्य की खोज करती है।

[14] डॉ0 परमानन्द श्रीवास्तवः हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया , पृष्ठ–196 –97

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies